शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मालवी निर्गुणी भजन में उपयोगी संगत वाद्य-यंत्र
(संत कबीर के सन्दर्भ में)

महेश यादव (शोधार्थी)
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत की सांगीतिक परंपरा अत्यंत प्राचीन है। इसका उद्गम सामवेद से हुआ है। शास्त्रीय संगीत के साथ यहाँ का लोक संगीत भी बहुत समृद्ध है। सांस्कृतिक विविधता ने संगीत की अनेक छटाएं विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक संगीत की अनेक पद्धतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। मालवा देश का मध्य बिंदु है। यहाँ के निर्गुण गायकों ने विश्वस्तर पर अपनी उपस्थित दर्ज कराई है। प्रस्तुत शोध पत्र में मालवांचल में निर्गुण गायकों द्वारा कबीर के भजनों की प्रस्तुति के दौरान उपयोग किये जाने वाले वाद्य यंत्रों की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

हमारी भारतीय संगीत परम्परा बहुत प्राचीन है। इसमें क्षेत्रीय परम्परा का अपना अलग महत्व है जिसे लोक संगीत कहते है। लोक संगीत भी अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के अनुसार गाया बजाया एवं नृत्य किया जाता है। भारत अनेकता में एकता वाला देश है जिसमें मध्यप्रदेश का मालवा क्षेत्र भी आता है तथा यहाँ की संस्कृति भी अपनी अलग मिठास लिये है।

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रय संगीत मुच्यते।[1]

गीत, वाद्य और नृत्य ये तीनों मिलकर संगीत बनता है। ये तीनों ही कलाएँ स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत की जाती हैं, फिर भी इन तीनों के सम्मिश्रण को संगीत कहते हैं। संगीत शब्द की उत्पत्ति 'सम' उपसर्ग से हुई है। सम यानी सहित और गीत यानी 'गान'। गान सहित अर्थात् अंगभूत क्रियाओं नृत्य व वादन के साथ किया हुआ कार्य संगीत कहलाता है।

संगत वाद्य यन्त्र : मालवी लोक संगीत की प्रमुख विधा लोक भजन है। जिनमें मध्यकाल के संत कवि कबीर द्वारा निर्मित पदों को मालवी बोली में गाया जाता है। संत कबीर के पद में उपयोग में लाये जाने वाले वाद्य यंत्रों का वर्णन इस शोध पत्र में किया जा रहा है जो निम्नलिखित हैं :

1 तम्बूर

यह एक प्रकार का तत् वाद्य है। इस वाद्य में पाँच तार होते हैं, जो अलग-अलग स्वर में मिलाये जाते हैं 'इन पाँच तारों को पाँच तत्व भी माना जाता है, जिनसे मानव शरीर बना है जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश। तम्बूर के पाँच तारों में से मध्य के तीन तारों को एक स्वर 'सा' में मिलाया जाता है तथा प्रथम को मंद्र पंचम तथा अंतिम को धैवत स्वर में मिलाया जाता है, जो निगुर्ण और

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सगुण के द्योतक माने जाते हैं। जब गायक तम्बूर में इन पाँच तारों का महत्व समझ लेता है तो वह आसानी से निर्गुण भक्तिधारा मे गोते लगा सकता है।

2 ढोलक

अखिल भारतीय स्तर पर प्रयुक्त यह लय वाद्य अंतःपुर से लेकर दरबारों तक अपना महत्वपूर्ण स्थान लिए हुए है। ढोल, ढोलक या ढोलकी भारतीय अवनद्ध वाद्य-यंत्र है। ये हाथ से बजाए जाने वाले छोटे नगाड़े हैं, जो मुख्य रूप से लोक संगीत या भक्ति संगीत में ताल देने के काम आते हैं। होली के गीतो में ढोलक का अधिक प्रयोग होता है। ढोलक और ढोलकी को अधिकतर हाथ से बजाया जाता है, जबकि ढोल को अलग-अलग तरह की छड़ियों से। ढोलक आम, शीशम, बींया या नीम की लकड़ी से बनाई जाती है। लकड़ी को पोला करके दोनों मुखों पर बकरे की खाल डोरियो से कसी जाती है। डोरी में छल्ले रहते हैं, जो ढोलक का स्वर मिलाने में काम आते हैं। ढोलक मालवा ही नहीं अपितु पूरे भारत में इसका उपयोग होता है, लेकिन लोक संगीत में बहुत अधिक उपयोग किया जाता है। ढोलक कबीर गायन में बहुत उपयोगी वाद्य यंत्रों में से एक है। इससे ताल पक्ष ओर अधिक मजबूत होता है और गायक को गायन करने में सुगमता होती है।

3 हारमोनियम

एक रीड आर्गन भांतियुक्त है, जिसमें हवा का प्रवाह रीड से होता है। उसे हारमोनियम कह सकते हैं। हारमोनियम स्वर वाद्य यंत्रों की श्रेणी का वाद्य है, जिसे संवादिनी भी कहा जाता है। जिसमें वायु प्रवाह किया जाता है और भिन्न चपटी स्वर-पटलों को दबाने से अलग-अलग सुर की ध्वनियाँ निकलती हैं। इसमें हवा का बहाव पैरों या हाथों से किया जाता है। हालांकि भारतीय उपमहाद्वीप में प्रयोग होने वाले हारमोनियम में हवा प्रवाह करने वाली धौंकनी हाथों पर ही हाती है। इस वाद्य का आविष्कार यूरोप में किया गया था और 19वीं शताब्दी के बीच फ्रांसीसी लोग भारत क्षेत्र में लाए। यह सीखने में आसान है। भारतीय संगीत के लिए अनुकूल होने की वजह से प्रसिद्ध हो गया। इसकी ध्वनि सुनने में कर्णप्रिय होती है। भारतीय संगीत के हिसाब से सारी खूबियाँ इसमें पाई जाती हैं। यह मुख्यतः तीन सप्तक का होता है। मन्द्र, मध्य और तार इन्हीं सप्तकों में गायक अपना गायन प्रस्तुत करते हैं। इस कारण इसका चलन भारत के लोक, शास्त्रीय व सुगम संगीत में होने लगा है। इसमें लगने वाले स्वर (रीड) भी उच्च कोटि के होते हैं। जर्मन स्वर का हारमोनियम उच्च कोटि का माना जाता है। भारत में कई प्रकार के स्वरों का हारमोनियम निर्मित किया जाता है। जिसमें पालीताणा में बनने वाले स्वर प्रमुख हैं। इस वाद्य का प्रयोग मालवी निर्गुणी भजनों में किया जाता है।

4 करताल

मीरा के पदो में इस वाद्य का उल्लेख मिलता है। 'पाँव बजावे मीरा घुंघरू रे हाथ बजावे करताल मुख से बजावे मीरा बांसुरी रे नाचे मदन गोपाल' इस प्रकार करताल का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। शास्त्रों में वर्णित क्रमिकों से आकार-प्रकार में कुछ भिन्न होने पर उसे करताल या खड़ताल कहते हैं। यह लगभग पाँच इंच से दस इंच लम्बे तथा लगभग दो इंच चौड़े ठोस

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लकडी के टुकड़े से बनायी जाती है। इसमें खंजरी के समान पीतल की छोटी झाँझों की दो स्थानों पर एक-एक जोड़ी लगी रहती है। यह चार टुकड़े में होती है, जिसमें दो टुकडे. दोनों हाथों के अंगूठों में तथा दो टुकड़े दोनों हाथों की शेष उंगलियों में पहनकर बजाते हैं। इसी उद्देश्य से दो टुकड़ों के मध्य अंगूठा प्रवेश के योग्य छिद्र रहता है तथा दो टुकड़ो में चार अंगुलियाँ प्रवेश कर सके, इतना बड़ा छिद्र रहता है। सन्त गायक एक जोड़ खड़ताल लेकर वादन करते हुए गायन करते हैं। मालवी लोकसंगीत में करताल का विशेष महत्व है। इस वाद्य यंत्र को मालवी लोक संगीत के कलाकार ताल देने के लिए प्रयोग करते हैं। मालवा में गायकों द्वारा एक हाथ में तम्बूर (एक प्रकार का तंतुवाद्य) तथा एक हाथ में करताल से गायन प्रस्तुत करते हैं। कई बार उनके द्वारा बिना किसी ताल वाद्य के करताल के द्वारा ही मात्राओं को गिनते हुए लोक गायन प्रस्तुत करते देखा जाता है, जो नैसर्गिक व देखने-सुनने में आकर्षक प्रतीत होता है।

5 मंजीरा/मंजीर/तालम्

संगीत ग्रंथों में मंजीर अथवा मंजीरा के वर्णन का अभाव है, किन्तु कृष्ण भक्त कवियों ने इसका उल्लेख अपने पदों में किया है। इन वर्णनों को देखने से ऐसा मालूम होता है कि कहीं इस शब्द का प्रयोग घुंघरूओं के लिए हुआ है तथा कहीं आधुनिक मंजीरा के अर्थ में प्राचीन ताल नामक वाद्य के समान ही होने के कारण संभवतया इसका अलग से उल्लेख करना प्राचीन ग्रंथकारों ने आवश्यक नहीं समझा। इस वाद्य को घन वाद्य के रूप में जाना जाता है यह वाद्य भारतीय संगीत में जो वाद्यों का वर्गीकरण किया गया है इन वाद्य यंत्रों में इसका वर्णन मिलता है। वस्तुतः आधुनिक मंजीरा प्राचीन काल से आकार में कुछ छोटा होता है तथा उसकी ध्वनि भी लगभग घुंघरूओं के समान होती है। इसलिए इस छोटी आकृति के वाद्य को ताल न कहकर मंजीरा कहा जाने लगा। ये कांसा, पीतल तथा अष्टधातु के बनते हैं जिनका व्यास लगभग चार अंगुल होता है। इनका मध्य क्षेत्र भी स्नातकार होता है जहाँ एक छिद्र होता है जिसमें डोरी पिरोई रहती है। इसी डोरी को उंगलियों में लपेटकर इनका वादन करते है। वर्तमान समय में विवाह आदि मांगलिक अवसरों पर ढोलक के साथ गान करती हुई ग्रामीण महिलाएँ इसका वादन करती हैं। मालवी निर्गुणी भजन में मंजीरा का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।

6 टिमकी

यह एक अवनद्ध वाद्य की श्रेणी में आता है इसका उपयोग पाश्चात्य संगीत में ज्यादातर किया जाता है, लेकिन मालवांचल में भी इस वाद्य का प्रयोग बहुतायत में किया जाने लगा है। इस वाद्य को मालवी लोक कबीर गायन में सर्वप्रथम श्री तेजुलाल यादव जी द्वारा 1990 से प्रचलन में लाया गया। इस वाद्य को फिल्म संगीत, पाश्चात्य संगीत आदि में भी उपयोग किया जाता है, परंतु वहाँ इसमें मसाला नही लगाया जाता है, लेकिन लोक गायकी में इसके बांये पुडे पर मसाला लगाकर लकड़ी से बजाया जाता है। आज यह वाद्य उपयोगी वाद्यों की श्रेणी का माना जाता है।

7 वायलीन

बेला या वायलीन के स्वरों की विशेषता का रहस्य इस बात में है कि उसे मूल स्वरों

में बहुत संनादी मिश्रित होते हैं। बेला के तार बहुत हल्के होते हैं जिसके कारण बहुत ऊँचे तारत्व वाले संनादी स्वर उत्पन्न होते हैं। इन संनादी स्वरों के कारण ध्वनि उजागर हो उठती है, परन्तु ताँत का न्यून लचीलापन इन संनादी स्वरों को शीघ्र ही मंद कर देता है। जिससे अंततोगत्वा ध्वनि की रूक्षता समाप्त हो जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 संगीत विशारद लेखक, वसंत, पृष्ठ 33

2 पद्मश्री प्रहलाद सिंह टिपानिया जी से चर्चा के अनुसार

3 भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, लेखक, अरूण कुमार सेन, पृष्ठ 151

4 हारमोनियम विविध आयाम, लेखक, विनय कुमार मिश्र, पृष्ठ 28

5 सुन्दरलाल मालवीय जी से साक्षात्कार के अनुसार